मीडिया विज्ञप्ति

महिंद्रा कबीरा फेस्टिवल के दूसरे दिन रहे कबीर के दोहों की सुरमयी प्रस्तुति, साहित्यिक चर्चा तथा बनारस की गलियों की यात्रा

मीडिया किट में तस्वीरें एवं फेस्टिवल से जुड़ी घोषणाएं मौजूद हैं

वाराणसी, 11 नवंबर 2017: वाराणसी में बृज राम पैलेस में कल के संगीतमय स्वागत के बाद आज शनिवार की सुबह दरभंगा घाट पर युवा कलाकार कुमार सारंग द्वारा संतूर की आध्यात्मिक ध्वनियों के साथ महिंद्रा कबीरा फेस्टिवल (एमकेएफ) का शुभारम्भ हुआ। बनारस घराने के कलाकार कुमार सारंग ने राग अहीर भैरव की धुन पर संतूर वादन पेश किया। उन्होंने झपताल (10 छंद) और तीन ताल (16 छंद) में दो बंदिशें पेश की। तबले पर उनका साथ श्रुतिशील उपाध्याय ने दिया।

इसके बाद रश्मि अग्रवाल ने अपनी सधी और सुरीली आवाज में कबीर और बाबा बुल्ले शाह की अर्थपूर्ण रचनाओं को पेश किया जिनके उपदेश एक समान थे। इन गीतों में ''साधो देखो रे जाग बौराना, नैहरवा उनका ना भावे, झीनी–झीनी बीनी चदरिया जैसे गीत शामिल किए गए। रश्मि अग्रवाल ने अपनी भावपूर्ण आवाज में गीत पेश करके उपस्थित श्रोताओं–दर्शकों को आनंदित किया। तबले पर उनका साथ दिया शांति भूषण झा ने, जबकि हारमोनियम पर बड्डू खान ने, गिटार पर अमर संगम ने और पर्कशन पर सतीश सोलंकी ने उनका साथ दिया।

उपस्थित दर्शक संगीतकारों की प्रस्तुतियों का भरपूर लुत्फ उठा रहे थे उसी दौरान एक पंडित जी ने प्रस्तुत की जा रही राग के अनुसार इत्र के अनूठे मिश्रण में भिंगोए गए फाहे को वहां उपस्थित अतिथियों को भेंट किया। अतिथियों ने खास बनारसी कुल्लहड़ चाय और चिउड़ा का लुत्फ उठाया और इसके बाद उन्हें केसर और पिस्ता से भरपूर स्वादिष्ट मलैय्यो या निमिश पेश किया गया और इस तरह से यादगार मिठास के साथ सुबह के सत्र का समापन हुआ।

घाट पर आयोजित संगीतमय आयोजन के बाद साहित्यिक सत्र – ''वर्ड्स ऑन वॉटर'' का शुभारंभ हुआ। इसकी शुरुआत अंकित चड्ढा की ओर से कबीर पर दास्तानगोई के साथ हुई। उनके कथ्य ऐतिहासिक अनुसंधान तथा 14 वीं शताब्दी के भक्ति कवि को लेकर बनी लोक कथाओं पर आधारित थे। इसके अलावा उन्होंने खड़ी बोली की कविता का भी सहारा लिया

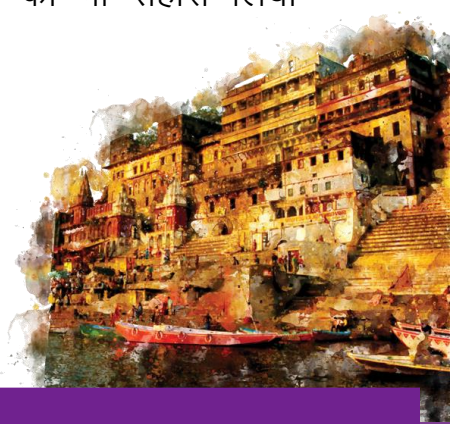

जिनमें लोकप्रिय संदर्भ शामिल थे। दास्तान के सहारे श्रोताओं को अपने भीतर ही कबीर की तलाश पर ले जाया गया।

फेस्टिवल में अपनी प्रस्तुति के बारे में बोलते हुएए अंकित चड्ढा ने कहा श्आज के ज़माने में कबीर को सुननाए कबीर को पढ़नाए कबीर को गाना और ख़ास तौर से उन्हे समझना बहुत ज़रूरी है । महिंद्रा कबीरा फेस्टिवल के इस प्रयास को देख करए इस में शामिल होकर मुझे बहुत खुशी मिली जहाँ कबीर का उन्ही के शहर में स्मरण हो रहा है। कबीर की इस पावन भूमि वाराणसी परए बहती गंगा के किनारे मुझे दास्तांगोई गायन में बहुत मज़ा आया। श्रोताओं ने भी काफ़ी प्रोत्साहन दिया और मुझे कबीर का अपने भीतर और आस पास होने का एहसास हुआश

इसके बाद टीमवर्क आर्ट्स के एमडी संजॉय रॉय और बुनाई उद्योग को पुनर्जीवित करने की कोशिश में जुटी आभा डालमिया के बीच संवाद का आयोजन हुआ। कबीर और बुनाई के बारे में बात करते हुए आभा डालमिया ने कहा, ''मुझे लगता है कि कबीर को बुनाई ने जीवन की तुलनात्मकता के बारे में बहुत कुछ सिखाया था। उन्होंने अपने जीवन में अपने विचारों को सच्चे तरीके से उतारा। बुनाई के दौरान ही वह अपने दोहों को रचना और गायन करते थे जो आज काफी लोकप्रिय हैं।''

दिन चढ़ने के साथ बनारस की गलियों से होकर सिटी वॉक का आयोजन हुआ। इसका उद्देश्य समारोह में उपस्थित लोगों का कबीर की नगरी – वाराणसी से परिचय कराना था। यह वॉक पांच नदियों – गंगा, सरस्वती, यमुना, किराना और धुपापापा के मिलन स्थल पंचगंगा घाट, जहां सौंदर्य एवं पवित्रता की मनोरम छटा बनती है, से होते हुए आलमगीर मस्जिद और मंगला गौरी मंदिर और भेलुपुर में जैन मंदिर तक हुआ। एक अन्य यात्रा में शामिल लोगों को कबीर मठए बुनकारों की गॅली तथा और कबीर से जुड़े अन्य स्थलों तक भी ले जाया गया।

शाम को अस्सी घाट के पास छोटानागपुर बगीचा में आयोजित संगीत संध्या में अनूठी संगीत शैलियों में विभिन्न कलाकारों ने संगीत की लहरियों के साथ कबीर के दोहों को पेश किया। संगीत संध्या की शुरूआत राजस्थानी कलाकार नाथूलाल सोलंकी के शंख वादन से हुई । इसके बाद बनारस घराने के विष्णु मिश्रा ने प्रस्तुति दी। श्याम ढलने के साथ बिंधुमालिनी एवं वेदांत की जोड़ी ने सुफी एवं भक्ति परम्परा के रहस्यमयी संत की लिखी रचनाओं को गाया। कर्नाटक एवं हिन्दुस्तानी संगीत में प्रवीण इन दोनों कलाकारों ने इन दोनों शैलियों का एक खूबसूरत

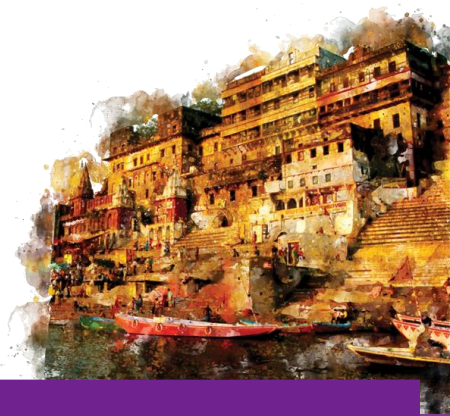

समागम पेश किया। इसके बाद, वादक महेश राम ने मेघवाल समुदाय की लोक शैलियों में अनेक रहस्यवादी संत कवियों की रचनाओं को पेश किया। दिन के आयोजन का समापन प्रसिद्ध गायिका शुभा मुदगल के गायन के साथ हुआ। उन्होंने अपनी सुरीली एवं सुशोभित आवाज में कबीर के दोहों पर आधारित गीतों को पेश करके उपस्थित लोगों को भाव विभार कर दिया।

रविवार को यह समारोह सुबह साढ़े छः बजे दरभंगा घाट से शुरू होगा जहां हरप्रीत सिंह अपनी प्रस्तुति पेश करेंगे। इसके बाद सुचित्रा गुप्ता की प्रस्तुति होगी। साहित्य सत्र 10.30 बजे शुरू होगा जिसमे दोहानोमिक्स के लेखक विनायक साप्रे कबीर के दोहों की अपरंपरागत व्याख्या करेंगे। इस सत्र में वह निजी लेखा–जोखा, म्युचुअल फंड निवेश और शेयर बाजार के पहलुओं को कबीर वाणी के द्वारा समझाएँगे और कबीर के अंतहीन विवेक और कालनिरपेक्ष ज्ञान के द्वारा निवेश की दुनिया के नियमों से दर्शकों को परिचित कराएँगे।

दोपहर को सिटी वॉक एवं कबीर वॉक होगा जिसके बाद श्याम सवा छः बजे अस्सी घाट पर आरती एवं वैदिक मंत्रोच्चार होंगे। इसके साथ ही संगीत संध्या की शुरुआत होगी। संगीत संध्या अस्सी घाट पर गंगा नदी में अस्त होते हुए सूर्य की पृष्ठभूमि में होगी जिसमें नगाड़ा पर गूँज उठाएंगे नाथूलाल सोलंकी और फिर फ्यूजन आधारित माती बाणी गायन करेंगे । इसके बाद हरप्रीत सिंघ और उनके सहकलकर प्रस्तुति देंगे तथा अंत में कैलाश खेर की शानदार प्रस्तुति होगी।

प्रवेशरू शनिवार और रविवार को प्रातः व सायं संगीत प्रदर्शन के लिए निःशुल्क पंजीकरण।

महिंद्रा के बारे में

19 अरब अमेरिकी डॉलर वाला महिंद्रा गुरप लोगों को नवीन यातायात समाधानों के माध्यम से आगे बढ़नेए ग्रामीण समृद्धिए शहरी जीवन को बढ़ानेए नए व्यवसायों को बढ़ावा देने और समुदायों को सक्षम बनाता है। वाहनोंए सूचना प्रौद्योगिकीए वित्तीय सेवाओं और भारत में अवकाश स्वामित्व में यह नेतृत्व की स्थिति में है। यह दुनिया की सबसे बड़ी ट्रैक्टर कंपनी है। कृषि व्यवसायए घटकोंए वाणिज्यिक वाहनोंए परामर्श सेवाओंए ऊर्जाए औद्योगिक उपकरणए रसदए रियल एस्टेटए स्टीलए एयरोस्पेसए रक्षा और दो पहिया वाहनों में इसकी मौजूदगी मजबूत है। इसका मुख्यालय भारत में है और यह 100 देशों के 200ए000 से अधिक लोगों को रोजगार देता है।

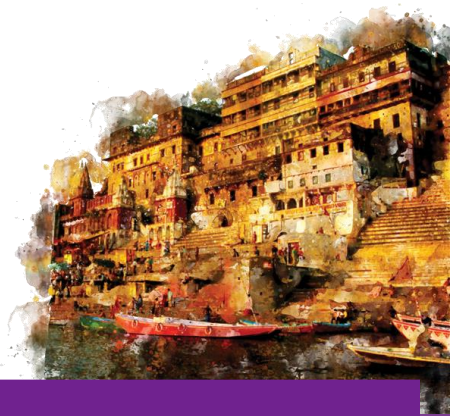

महिंद्रा के बारे में अधिक जानने के लिएः ूण्डीपदकतंण्बवउ ६ ट्विटर और फेसबुकः /डीपदकतंत्पेम

टीमवर्क आर्ट्स के बारे में

25 से अधिक वर्षों से टीमवर्क आर्ट्स ने भारत को दुनिया में और दुनिया को भारत में शामिल किया है। ऑस्ट्रेलियाए कनाडाए मिस्रए फ्रांसए जर्मनीए हांगकांगए इटलीए इजराइलए कोरियाए सिंगापुरए दक्षिण अफ्रीकाए स्पेनए यूके और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों मेंए 40 से अधिक शहरों मेंए टीमवर्क 25 से अधिक अत्यधिक प्रतिष्ठित परफॉर्मिंग आर्टए विजुअल आर्ट एवं साहित्यिक उत्सवों का आयोजन करती है। टीमवर्क आर्ट्स द्वारा किए जाने वाले प्रमुख आयोजनों में है दुनिया के सबसे बड़े साहित्यिक सम्मेलनों में से एक जी जयपुर लिटरेचर फ़ेस्टिवल, नई दिल्ली में इशारा इंटरनेशनल पपेट थिएटर फेस्टिवल और महिंद्रा एक्सीलेंस इन थियेटर अवॉर्ड्स (मेटा) । अंतरराष्ट्रीय उत्सवों में शामिल हैं दक्षिण अफ्रीका में शेयर्ड हिस्ट्रीए अमेरिका में आई ऑन इंडियाए हांगकांग में इंडिया बाय द बेए ऑस्ट्रेलिया में कांफ्लुएंस: फेस्टिवल ऑफ़ इंडियाए और इंडिया/70ए 2017रू यूनाइटेड किंगडम में संस्कृति का वर्ष आदि।

वेबसाइट : ूण्जमंउूवतांतजेण्बवउ

.म्छवै.